श्री तारतम वाणी

मेहेर सागर

(अर्थ सहित)

नित्य पाठ

सागर आठमा मेहेर का

इस प्रकरण में मेहर सागर की विशेषताओं पर विशेष विवेचना की गयी है।

और सागर जो मेहेर का, सो सोभा अति लेत।

लेहेरें आवें मेहेर सागर, खूबी सुख समेत।।१।।

और यह आठवाँ सागर प्रियतम परब्रह्म की कृपा (मेहर) का सागर है, जिसकी शोभा अनन्त है। इस सागर में अन्य सातों सागरों की विशेषतायें अपने आनन्द सहित छिपी हुई हैं। इस सागर में पूर्व के सात सागरों की अनन्त लहरें उमड़ती रहती हैं।

भावार्थ– सच्चिदानन्द परब्रह्म अनन्त निधियों का मूल है, पूर्णातिपूर्ण है। ऋग्वेद के ऐतरेय ब्राह्मण ने जहाँ उसे "एकमेव अद्वितीयम्" कहा, तो तैतरीयोपनिषद् ने

"आनन्दो ब्रह्म" कहा, और अथर्ववेद १०/८/१ ने "स्वर्यस्य च केवलं" (मात्र आनन्द स्वरूप) कहकर मौन धारण कर लिया। इसी प्रकार कतेब परम्परा में परब्रह्म को तेज, शोभा, और सौन्दर्य का सागर (नूरजमाल) कहा गया है।

किन्तु जब तक इन अनन्त निधियों का लीला रूप में प्रकटीकरण न हो, तब तक क्या इन गुणों की सार्थकता सिद्ध हो सकती है?

फारसी भाषा का शब्द "मेहर" संस्कृत में कृपा कहलाता है। "कृ" धातु का तात्पर्य करने से होता है। इस प्रकार (उप+कृ+घ्) से उपकार (अनुग्रह) शब्द सिद्ध होता है। लीला रूप में परब्रह्म की अनन्त निधियों के आत्मा में प्रवाहित होने की प्रक्रिया ही अनुग्रह (मेहर) कहलाती है।

स्वलीला अद्वैत सच्चिदानन्द परब्रह्म का हृदय समस्त निधियों का भण्डार है, जिनका प्रकटीकरण ही उनके सम्पूर्ण रूप में दृष्टिगोचर हो रहा है। यद्यपि परमधाम में अन्दर–बाहर एक ही स्वरूप होने से रूप और स्वरूप में कोई अन्तर नहीं है, किन्तु यहाँ के भावों से समझने के लिये इन शब्दों का प्रयोग किया गया है। इसे श्रीमुखवाणी में इस प्रकार कहा गया है–

आसिक अपने सौक को, विध विध सुख चहे।
सोई विध विध रूप सरूप के, नई नई लज़त लहे।।
दिल रूहें बारे हजार को, रूप नए नए चाहे दमदम।
दे चाह्या सरूप सबन को, इन बिध कादर खसम।।

सिनगार २१/३१,३२

इसी प्रकार नख से शिख तक श्री राज जी का स्वरूप ही श्यामा जी, सखियों, अक्षर ब्रह्म, महालक्ष्मी, एवं

परमधाम के २५ पक्षों के रूप में दृष्टिगोचर हो रहा है। इसे ही मारिफत का हकीकत में प्रकटीकरण कहते हैं। ऋग्वेद की भाषा में इसे "ऋत्" से सत्य का प्रकटीकरण कहते हैं। ऋत् का भावार्थ है– वह परमसत्य जिसकी प्रामाणिकता में किसी की अपेक्षा न हो। दूसरे शब्दों में, हम ऐसा भी कह सकते हैं कि अक्षरातीत की समस्त निधियाँ सत्य (हकीकत) के रूप में लीला कर रही हैं, किन्तु उनका मूल अक्षरातीत के दिल में है।

परब्रह्म के पूर्ण होने से यद्यपि हकीकत के कण–कण में मारिफत (परमसत्य) की अनुभूति की जाती है, किन्तु उसका मूल श्रोत अक्षरातीत का निज स्वरूप ही होता है। इस प्रकार अक्षरातीत परब्रह्म के हृदय में उमड़ने वाले सातों सागरों की लहरों का रसास्वादन करना ही मेहर सागर को प्राप्त करना है। इस तथ्य को ऐसे भी कह

सकते हैं कि धाम धनी के मारिफत स्वरूप दिल की पहचान ही मेहर सागर की पहचान है।

संक्षेप में मेहर सागर की लहरें इस रूप में आत्मा को अनुभूत होनी चाहिए–

१. आत्मा को युगल स्वरूप सहित अपनी परात्म, सभी ब्रह्मात्माओं, तथा सम्पूर्ण २५ पक्षों के नूरी स्वरूप का साक्षात्कार हो जाये।

२. उसे अपनी परात्म के नख से शिख तक की सम्पूर्ण शोभा का अनुभव हो जाये।

३. उसे यह अनुभव हो जाये कि उसका दिल भी श्री राज जी का ही दिल है तथा सभी ब्रह्माँगनाओं में उसी का अद्वैत स्वरूप विराजमान है।

४. युगल स्वरूप के नख से शिख तक की शोभा उसके धाम हृदय में बस जाये।

५. प्रियतम के प्रेम के अतिरिक्त सारा ब्रह्माण्ड उसे विष के समान लगने लगे।

६. बिना किसी के बताये ब्रह्मवाणी के गुह्यतम रहस्यों का उसे बोध हो जाये।

७. अक्षरातीत के दिल से उसका एकत्व स्थापित हो जाना चाहिये। उसे यह स्पष्ट रूप से अनुभव होना चाहिए कि उसका स्वरूप श्री राज जी का ही स्वरूप है। दोनों में मूलतः कोई अन्तर नहीं है। यद्यपि लीला रूप में वह इस पञ्चभौतिक तन से पृथक श्यामा स्वरूपा है, किन्तु उसका मूल स्वरूप अक्षरातीत का दिल है। अक्षरातीत से एकत्व के सम्बन्ध में ऋग्वेद का यह कथन देखने योग्य है–

यदग्ने स्यामहं त्वं त्वं वा घा स्या अहम्।
स्युष्टे सत्या इहाशिषः।। ऋग्वेद ८/४४/२३

अर्थात् हे परब्रह्म! जो "तू" है वह "मैं" हो जाऊँ और जो "मैं" हूँ वह "तू" हो जाये। इस सम्बन्ध में तुम्हारा यह अनुग्रह (आशीष) सत्य हो।

यदि इस प्रकार की अनुभूति आत्मा को होती है, तो वह कह सकती है कि मैंने धाम धनी की मेहर (अनुग्रह) को प्राप्त कर लिया है।

हुकम मेहेर के हाथ में, जोस मेहेर के अंग।

इस्क आवे मेहेर से, बेसक इलम तिन संग।।२।।

धनी का हुक्म मेहर के अन्दर निहित है। इसी प्रकार जोश भी मेहर का ही अंग है। धनी की मेहर से ही आत्मा के अन्दर धनी का प्रेम (इश्क) आता है और उसके साथ ही संशयों को दूर करने वाले तारतम ज्ञान का प्रकाश होता है।

भावार्थ– इस चौपाई में यह संशय होता है कि जब पूर्व में यह वर्णित किया जा चुका है कि श्री राज जी के दिल की इच्छा को हुक्म कहते हैं, तो इस चौपाई के पहले चरण में वर्णित "हुकम" का स्वरूप क्या है जो मेहर में विद्यमान है?

इसके समाधान में ऐसा कहा जा सकता है कि जब आत्मा धाम धनी का साक्षात्कार करके एकरूप हो जाती है, तो उस अवस्था में लौकिक इच्छाओं से उसका किसी प्रकार का सम्बन्ध नहीं रह जाता। धनी की प्रेरणा से वह यन्त्रवत् कार्य करती है। अब उसकी इच्छा धनी की इच्छा बन जाती है और धनी की इच्छा उसकी इच्छा बन जाती है। इसे ही श्रृंगार २/९ में कहा गया है कि "हैं हमहीं हक हुकम।"

इसी अवस्था में आत्मा को धनी के जोश का अनुभव

होता है, जो बाह्मी अवस्था का परिचायक होता है।

प्रेम और ज्ञान एक–दूसरे के पूरक हैं। धाम धनी की मेहर (कृपा) से ही आत्मा में परमधाम का इश्क आता है, जिससे वह संशय रहित ज्ञान का अधिकार प्राप्त कर लेती है।

पूरी मेहेर जित हक की, तित और कहा चाहियत।

हक मेहेर तित होत है, जित असल है निसबत।।३।।

जहाँ अक्षरातीत की पूर्ण कृपा होती है, वहाँ और क्या चाहिए। धाम धनी की वास्तविक कृपा वहीं पर होती है, जहाँ परमधाम का मूल अँकुर (आत्मा) होता है।

भावार्थ– जिस आत्मा के धाम हृदय में परब्रह्म के सागरों की रसधारा प्रवाहित हो रही होती है, उसके लिये करोड़ों वैकुण्ठ के राज्य भी तुच्छ प्रतीत होते हैं। किरंतन

१७८/२ का कथन "कई कोट राज बैकुण्ठ के, न आवे इतके खिन समान" इसी सन्दर्भ में है, किन्तु इस प्रकार की अवस्था मात्र ब्रह्मसृष्टियों को ही प्राप्त होती है। धनी के चरणों में आने के बाद, अर्थात् ब्रह्मवाणी का चिन्तन–मनन करने के पश्चात्, भी जीव सृष्टि न तो सांसारिक इच्छाओं का परित्याग कर पाती है और न प्रेम की राह अपना कर ब्राह्मी अवस्था की प्राप्ति कर पाती है। इस प्रकार, वह श्री राज जी की पूर्ण मेहर से वंचित रह जाती है।

मेहेर होत अव्वल से, इतहीं होत हुकम।

जलूस साथ सब तिनके, कछू कमी न करत खसम।।४।।

अपनी अँगनाओं पर धनी की मेहर परमधाम से ही रही है और इस खेल में भी उन्हीं की इच्छा से मेहर बरस

रही है। मेहर की इस शोभा यात्रा में धाम धनी की सम्पूर्ण निधियाँ साथ में हैं। प्रियतम अक्षरातीत इसमें किसी प्रकार की कमी नहीं करते हैं।

भावार्थ– श्री राज जी के हृदय की रसधारा तो परमधाम में पल–पल अखण्ड रूप से प्रवाहित होती ही है। इस खेल में भी आत्म–जाग्रति की अवस्था में उसका अनुभव हो सकता है। जिस प्रकार किसी राजा की शोभा यात्रा में उसका सम्पूर्ण ऐश्वर्य– मन्त्री और सेना आदि के रूप में– दिखायी देता है, उसी प्रकार जब अक्षरातीत इस नश्वर ब्रह्माण्ड में अपने आवेश स्वरूप से आये हैं तो उनके साथ उनके हृदय के सभी सागरों का रस भी आया है जिसका स्वाद ब्रह्मसृष्टियाँ ले रही हैं।

ए खेल हुआ मेहेर वास्ते, माहें खेलाए सब मेहेर।

जाथें मेहेर जुदी हुई, तब होत सब जेहेर।।५।।

माया का यह खेल धाम धनी ने अपने पूर्ण स्वरूप की पहचान देने के लिये बनाया है। इस खेल में ब्रह्मसृष्टियों के साथ होने वाली सारी लीला मेहर की छत्रछाया में ही हो रही है। यदि किसी से अक्षरातीत की यह मेहर अलग हो जाये, तो उसे यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड विष के समान कष्टकारी लगने लगता है।

भावार्थ– परमधाम में श्री राज जी ने अपनी हकीकत के आनन्द में श्यामा जी एवं ब्रह्मात्माओं को डुबो रखा था, जिसके कारण उनके मारिफत स्वरूप दिल की पहचान किसी को भी नहीं थी। उस पहचान को बताने के लिये ही यह खेल बनाया गया है। "मेहर का दरिया दिल में लिया तो रूहों के दिल में खेल देखने का ख्याल उपजा"

का कथन इसी प्रसंग में है। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि जिस मेहर की पहचान देने के लिये यह खेल बना है, सभी लीलाओं के केन्द्र में वही रहेगी। इस सम्बन्ध में खिल्वत १२ /१०० का यह कथन बहुत महत्वपूर्ण है–

महामत कहे ऐ मोमिनों, तुम पर दम–दम जो बरतत।
सो सब इस्क हक का, पल–पल मेहर करत।।

अपने प्राणवल्लभ के हृदय की पहचान ही तो अँगनाओं के जीवन का आधार है। उससे (मेहर से) अलग होकर भला वे इस झूठे संसार में प्रसन्नतापूर्वक कैसे रह सकती हैं।

दोऊ मेहेर देखत खेल में, लोक देखें ऊपर का जहूर।
जाए अन्दर मेहेर कछू नहीं, आखिर होत हक से दूर।।६।।

आत्मा इस खेल में दोनों तरह की मेहर का अनुभव कर

रही है– १. जाहिरी २. बातिनी (गुह्य)। संसार के जीव तो चमत्कारों आदि से केवल ऊपरी पहचान ही ले पाते हैं। जिनके अन्दर थोड़ी भी मेहर नहीं होती, वे अन्ततोगत्वा धाम धनी से दूर हो जाते हैं।

भावार्थ– आत्मिक धरातल पर परमधाम के पच्चीस पक्षों तथा युगल स्वरूप की शोभा–श्रृंगार आदि का अनुभव होना बातिनी (गुह्य) मेहर है।

शरीर, इन्द्रियों, एवं अन्तःकरण के द्वारा जिस कृपा का अहसास होता है, उसे जाहिरी (प्रत्यक्ष) मेहर कहते हैं। व्रज लीला एवं जागनी लीला में धाम धनी ने अपनी अलौकिक लीलाओं से सुन्दरसाथ को मायावी कष्टों से बचाया तथा उन्हें सुखों में डुबोये रखा। यह भी प्रत्यक्ष कृपा के अन्तर्गत है। मात्र चमत्कारों की बात सुनकर जो लोग धाम धनी के चरणों में आते हैं, उनका ईमान रूपी

महल बालू की दीवार पर खड़ा होता है, जो मायावी कष्टों में भरभराकर गिर जाता है। ऐसे लोगों पर इश्क –इल्म की कृपा नहीं होती, जिसके कारण माया के थपेड़ों से घबराकर ये लोग श्री राज जी के चरणों से दूर हो जाते हैं।

मेहेर सोई जो बातूनी, जो मेहेर बाहेर और माहें।

आखिर लग तरफ धनी की, कमी कछुए आवत नाहें।।७।।

ब्रह्मसृष्टियों पर जो बाह्य और आन्तरिक मेहर होती है, उसमें आत्मा के लिये होने वाली मेहर ही वास्तविक मेहर (कृपा) है। इस प्रकार की मेहर में पल–पल धनी से अखण्ड सम्बन्ध बना रहता है तथा प्रेम एवं आनन्द में किसी प्रकार की कमी नहीं होती।

भावार्थ– बातिनी (आन्तरिक) मेहर को ही वास्तविक

मेहर कहने का कारण यह है कि आत्मिक आनन्द अखण्ड होता है, जबकि बाह्य कृपा (मेहर) का प्रभाव कुछ समय के लिये ही होता है। शरीर और इन्द्रियों के नश्वर होने के कारण इनके द्वारा होने वाली अनुभूति भी अपना अखण्ड प्रभाव नहीं छोड़ पाती।

मेहेर होत है जिन पर, मेहेर देखत पांचों तत्व।

पिंड ब्रह्माण्ड सब मेहेर के, मेहेर के बीच बसत।।८।।

जिनके ऊपर धाम धनी की वास्तविक कृपा होती है, उन्हें यही प्रतीत होता है कि सब कुछ मेहर की छत्रछाया में हो रहा है। उन्हें पाँच तत्वों वाला अपना शरीर तथा सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड भी मेहर से ही भरा हुआ दिखायी देता है।

भावार्थ– जिस प्रकार आँखों पर जिस रंग का चश्मा

चढ़ाते हैं सभी वस्तुएँ उसी रंग की दिखायी देती हैं, उसी प्रकार आत्मा जब माया से अपनी दृष्टि हटाकर धनी की मेहर को देख (पहचान) लेती है तो उसे प्रत्येक वस्तु उसी रूप में दृष्टिगोचर होने लगती है।

दुख रूपी इन जिमी में, दुख न काहूं देखत।
बात बड़ी है मेहेर की, जो दुख में सुख लेवत।।९।।

जिसके ऊपर प्रियतम की कृपा बरसती है, उसे इस दुःखमय संसार में भी दुःख का अनुभव नहीं होता। दुःखों से भरपूर इस ब्रह्माण्ड में अखण्ड सुख का रसपान करना धाम धनी की मेहर से ही सम्भव है। यह मेहर की बहुत बड़ी महिमा है।

भावार्थ– दुःखों का कारण अज्ञानतावश होने वाला तृष्णा का बन्धन है। जब आत्मा के धाम हृदय में प्रियतम

के आनन्द का सागर लहराने लगता है, तो उसे सांसारिक कष्टों का वैसे ही कोई आभास ही नहीं होता जैसे महाहिमालय अपनी तलहटी में बहने वाली नदी की धारा के टकराव से विचलित नहीं होता।

कृपा (अनुग्रह) और मेहर शब्द में केवल भाषा भेद है। इनमें मूलतः भेद नहीं है। इतना अवश्य है कि श्री राज जी की कृपा को सांसारिक भाव वाली दया की कृपा नहीं समझना चाहिए, बल्कि प्रियतम श्री राज जी में अपनी प्रियतमा श्यामा जी एवं ब्रह्मसृष्टियों को प्रेम द्वारा रिझाने के लिये अपना सर्वस्व लुटाने या न्योछावर करने की जो प्रवृत्ति है, उसे ही कृपा या मेहर कहते हैं। श्रीमुखवाणी के इन कथनों में यही बात दर्शायी गयी है।

कृपा है कई विध की, ए जो तीनों सृष्ट ऊपर।

कृपा करनी माफक, कृपा माफक करनी।

किरंतन ७९/१४,१५

और मेहेर ए देखियो, कर दियो धाम वतन।

साख पुराई सब अंगों, यों कई विध कृपा रोसन।।

किरंतन ८२/७

सुख में तो सुख दायम, पर स्वाद न आवत ऊपर।

दुख आए सुख आवत, सो मेहेर खोलत नजर।।१०।।

परमधाम में अखण्ड सुख है, किन्तु एकरसता होने से उसका स्वाद नहीं मिल पाया था। अब इस दुःख के ब्रह्माण्ड में आने से परमधाम के सुख का स्वाद मिला है। इस प्रकार का अनुभव मेहर के द्वारा ही सम्भव हो पाया है।

इन दुख जिमी में बैठ के, मेहेरें देखें दुख दूर।

कायम सुख जो हक के, सो मेहेर करत हजूर।।११।।

इस दुःखमय संसार में आत्मा ने धनी की मेहर से स्वयं को दुःखों से दूर होने का अनुभव किया है। श्री राज जी की मेहर से ही परमधाम के अखण्ड सुखों का अनुभव इस संसार में होने लगता है।

भावार्थ– यद्यपि लौकिक सुख–दुःख का भोक्ता जीव है, आत्मा नहीं। आत्मा तो मात्र द्रष्टा है, किन्तु किसी को दुःखी देखकर कुछ दुःख का अनुभव होता ही है। इस चौपाई में आत्मा के साथ दुःखों के सम्बन्ध होने का यही भाव है।

मैं देख्या दिल विचार के, इस्क हक का जित।

इस्क मेहेर से आइया, अव्वल मेहेर है तित।।१२।।

मैंने अपने दिल में विचार कर यह बात देखी कि यदि किसी आत्मा में धनी का प्रेम है, तो वह मात्र धनी की मेहर से है। प्रेम आत्मा के ऊपर होने वाली मेहर का सर्वप्रथम अंग है।

भावार्थ– इस चौपाई से यह स्पष्ट होता है कि किसी के हृदय में प्रेम आ जाना धनी की कृपा का प्रत्यक्ष रूप है। भला इस मायावी जगत में प्रियतम परब्रह्म की कृपा के बिना कौन प्रेम की राह पर चल सकता है।

अपना इलम जिन देत हैं, सो भी मेहेर से बेसक।
मेहेर सब बिध ल्यावत, जित हुकम जोस मेहेर हक।।१३।।

इसमें कोई शक नहीं कि यदि धाम धनी किसी को तारतम वाणी का गुह्य ज्ञान देते हैं, तो उसमें भी उनकी मेहर छिपी होती है। धनी की कृपा से उसे सारा यथार्थ

ज्ञान बहुत ही सरलता से प्राप्त हो जाता है। जिस आत्मा के धाम हृदय में धनी की कृपा का प्रवाह बहता है, उसमें प्रियतम का हुक्म एवं जोश भी विराजमान होता है।

जाको लेत हैं मेहेर में, ताए पेहेले मेहेरें बनावें वजूद।
गुन अंग इंद्री मेहेर की, रूह मेहेर फूंकत माहें बूद।।१४।।

धाम धनी जिसे भी अपनी मेहर की छाँव तले लेते हैं, उसे सबसे पहले अपनी मेहर के अनुकूल बनाते हैं। वे उसके गुण, अन्तःकरण, तथा इन्द्रियों में अपनी कृपा की सुगन्धि भर देते हैं तथा उसकी आत्मा में मेहर का रस उड़ेल देते हैं।

भावार्थ– आत्मा के धाम हृदय में मेहर सागर का रस प्रवाहित होने के लिये यह आवश्यक है कि उसकी इन्द्रियों तथा अन्तःकरण में निर्विकारिता आये तथा

सत्व, रज, एवं तम की परिधि को पारकर त्रिगुणातीत अवस्था की प्राप्ति की जाये। यह उपलब्धि मात्र प्रेम और ज्ञान के द्वारा ही की जा सकती है, इसलिये धाम धनी उसके अन्दर प्रेम की धारा बहाकर पात्रता लाते हैं, तत्पश्चात् उसे अपने मेहर सागर में डुबो देते हैं।

मेहेर सिंघासन बैठक, और मेहेर चँवर सिर छत्र।

सोहोबत सैन्या मेहेर की, दिल चाहे मेहेर बाजंत्र।।१५।।

जिस आत्मा के धाम हृदय में अक्षरातीत को विराजमान होना होता है, उसमें मेहर का सिंहासन सज जाता है। सिर के ऊपर छत्र एवं चँवर भी मेहर के होते हैं। इसके अतिरिक्त साथ में सेना भी मेहर की होती है तथा दिल की इच्छानुसार खुशी के बजने वाले बाजे भी मेहर के ही होते हैं।

भावार्थ– इस चौपाई में आलंकारिक रूप से यह वर्णन किया गया है कि जब कोई चक्रवर्ती सम्राट सिंहासन पर बैठता है तो उसकी क्या शोभा होती है। वस्तुतः अक्षरातीत ही समस्त ब्रह्माण्डों के सम्राट हैं। "एको भुवनस्य राजा" (वेद) का कथन इसी प्रसंग में है।

इसमें संक्षिप्त रूप से मेहर के अंगों – इश्क, इल्म, निस्बत, आनन्द– का वर्णन है। प्रेम का सिंहासन है, छत्र और चँवर ज्ञान के स्वरूप हैं, तो उसकी सुगन्धि से एकत्रित होने वाले सुन्दरसाथ निस्बत के स्वरूप हैं। इसी प्रकार बजने वाले बाजे आनन्द के स्वरूप हैं।

आत्मा का हृदय ही वह धाम है, जिसमें परब्रह्म विराजमान होते हैं। उनकी शोभा रूपी सम्पूर्ण सामग्री मेहर की होती है, अर्थात् धनी की मेहर के बिना अपने दिल में कभी भी प्रियतम को नहीं बसाया जा सकता।

बोली बोलावें मेहेर की, और मेहेरैं का चलन।

रात दिन दोऊ मेहेर में, होए मेहेरें मिलावा रूहन।।१६।।

जिसके हृदय में प्रियतम परब्रह्म विराजमान हो जाते हैं, उसकी वाणी ही धनी की मेहर (कृपा) को दर्शाने लगती है। उसका आचरण (रहनी) भी मेहर के रस में भीना रहता है। उसे रात–दिन जाहिरी एवं बातिनी (गुह्य) मेहर का अनुभव होता रहता है और उसकी सान्निध्यता में ब्रह्मसृष्टियों का समूह आने लगता है।

बंदगी जिकर मेहेर की, ए मेहेर हक हुकम।

रूहें बैठी मेहेर छाया मिने, पिए मेहेर रस इस्क इलम।।१७।।

धाम धनी की कृपा एवं आदेश (हुक्म) से ही ब्रह्मसृष्टियाँ अपने प्रियतम की प्रेम लक्षणा भक्ति में डूबी रहती हैं तथा हमेशा उनकी मेहर की चर्चा करती हैं।

मेहर की छत्रछाया में ही वे प्रियतम के प्रेम तथा ब्रह्मवाणी के ज्ञान का रसपान करती हैं।

जित मेहेर तित सब है, मेहेर अव्वल लग आखिर।

सोहोबत मेहेर देवहीं, कहूं मेहेर सिफत क्यों कर।।१८।।

जहाँ श्री राज जी की कृपा है, वहाँ सब कुछ है। उनकी यह मेहर तो परमधाम से लेकर अब तक (जागनी ब्रह्माण्ड तक) चली आयी है। धनी की मेहर से ही उनके चरणों की सान्निध्यता प्राप्त होती है। अक्षरातीत परब्रह्म की मेहर की अनन्त महिमा का वर्णन मैं कैसे करूँ।

भावार्थ– इस चौपाई में "अव्वल" शब्द का प्रयोग परमधाम के लिये तथा "आखिर" का प्रयोग इस जागनी ब्रह्माण्ड के लिये हुआ है।

ए जो दरिया मेहेर का, बातून जाहेर देखत।

सब सुख देखत तहां, मेहेर जित बसत।।१९।।

मेहर के सागर से आत्मा को जाहिरी (प्रत्यक्ष) एवं बातिनी (अप्रत्यक्ष) दोनों प्रकार की मेहर का रसास्वादन होता है। जहाँ धाम धनी की कृपा होती है, वहाँ प्रत्येक प्रकार का (बाह्य एवं आत्मिक) सुख होता है।

भावार्थ– इस चौपाई में बाह्य सुख का तात्पर्य है – अन्तःकरण एवं इन्द्रियों से प्राप्त किया जाने वाला सुख। ब्रह्मज्ञान की बातों को सुनने एवं चिन्तन–मनन करने से अन्तःकरण को सुख प्राप्त होता है। लौकिक कष्टों से शरीर की सुरक्षा भी बाह्य सुख के अन्तर्गत है। व्रज लीला में अनेक राक्षसों एवं इन्द्र –कोप से सुरक्षा भी प्रत्यक्ष कृपा (जाहिरी मेहर) है। सद्गुरू धनी श्री देवचन्द्र जी से प्राप्त होने वाली आड़िका लीला का सुख भी जाहिरी मेहर

है। इसी प्रकार शाहजहाँपुर बोड़िये में प्रत्यक्ष मृत्यु से गरीबदास जी की प्राण–रक्षा करना, मन्दसौर में मुगल सेना से सुन्दरसाथ की सुरक्षा करना, काजी से होने वाले विवाद में लालदास जी की जीवन रक्षा करना, तथा छत्रसाल जी के डूबते घोड़े को केन नदी से पार करना धनी की जाहिरी मेहर है।

गुह्य अर्थात् अप्रत्यक्ष अनुग्रह (बातिनी मेहर) का सम्बन्ध मात्र आत्मा से होता है। इसमें परमधाम के सभी सागरों का रस प्रवाहित होने लगता है और आत्मा अपने प्राण प्रियतम से एकरूप हो जाती है।

बीच नाबूद दुनी के, आई मेहेर हक खिलवत।

तिन से सब कायम हुए, मेहेरै की बरकत।।२०।।

इस नश्वर जगत् में यह मेहर मूल मिलावा में विराजमान

अक्षरातीत श्री राज जी के दिल से आयी है। धाम धनी के अनुग्रह से ही इस ब्रह्माण्ड के सभी प्राणियों को अखण्ड मुक्ति मिली है (मिलेगी)।

बरनन करूं क्यों मेहेर की, सिफत ना पोहोंचत।

ए मेहेर हक की बातूनी, नजर माहें बसत।।२१।।

मैं अपने प्राण प्रियतम अक्षरातीत की मेहर का वर्णन कैसे करूँ। यहाँ के शब्दों में वर्णन करने का सामर्थ्य ही नहीं है। धनी की यह बातिनी मेहर उनकी प्रेम भरी दृष्टि में निहित होती है।

भावार्थ– धनी की प्रेम भरी दृष्टि से आत्मा में प्रेम का रस प्रवाहित होता है, जिससे वह जाग्रत होकर श्री राज जी के अखण्ड आनन्द का पान करने लगती है। इस चौपाई की दूसरी पंक्ति का यही आशय है।

ए मेहेर करत सब जाहेर, सबका मता तोलत।

जो किन कानों ना सुन्या, सो मेहेर मगज खोलत।।२२।।

श्री राज जी की बातिनी मेहर से सभी धर्मग्रन्थों के भेद स्पष्ट होते हैं और इसके द्वारा ही सभी मतों के ज्ञान के स्तर का आँकलन होता है। आज तक अध्यात्म जगत की जिन बातों के बारे में किसी ने सुना नहीं होता, इस बातिनी मेहर से उसके भी गुह्य भेदों का स्पष्टीकरण हो जाता है।

भावार्थ– प्रायः प्रत्येक मत का अनुयायी अपने ही धर्मग्रन्थों और सिद्धान्तों को सर्वोपरि मानता है, किन्तु परम सत्य तो सर्वथा एक ही होता है। जब तक ब्राह्मी अवस्था प्राप्त नहीं होती, तब तक यथार्थ सत्य को नहीं जाना जा सकता, क्योंकि मानवीय बुद्धि के ज्ञान की एक सीमा होती है। धाम धनी की मेहर से ही आत्मिक दृष्टि

खुलती है और सभी धर्मग्रन्थों में छिपे हुए उस यथार्थ सत्य को जान लिया जाता है, जिसके बारे में कोई सोच भी नहीं सकता था। मात्र धनी की इस मेहर से ही यह जाना जा सकता है कि किस मत की आध्यात्मिक उपलब्धि कहाँ तक है, अन्यथा प्रत्येक मत का अनुयायी केवल अपने को ही परब्रह्म के साक्षात्कार का अधिकारी मानता है, अन्यों को नहीं।

बरनन करूं क्यों मेहेर की, जो बसत हक के दिल।

जाको दिल में लेत हैं, तहां आवत न्यामत सब मिल।।२३।।

अक्षरातीत के हृदय में विराजमान मेहर के सागर की महिमा का वर्णन मैं कैसे करूँ। धाम धनी जिसे अपने दिल में ले लेते हैं, उस आत्मा में मेहर के सागर की सारी निधियाँ विराजमान हो जाती हैं।

भावार्थ– इस चौपाई में सभी निधियों का आशय सातों सागरों के रस से है।

बरनन करूं क्यों मेहेर की, जो बसत है माहें हक।

जाको निवाजें मेहेर में, ताए देत आप माफक।।२४।।

अक्षरातीत के हृदय में निहित मेहर के सागर की गरिमा का मैं कैसे वर्णन करूँ। धाम धनी जिस पर अपनी अनुकम्पा (कृपा) बरसाते हैं, उसे अपने अनुकूल देते हैं।

भावार्थ– इस चौपाई के चौथे चरण का विशिष्ट भाव है। अक्षरातीत के हृदय में अनन्त प्रेम, अनन्त आनन्द, और अनन्त अनुग्रह का सागर लहराया करता है। उनके किसी भी गुण की कोई सीमा रेखा नहीं खींची जा सकती। इस प्रकार उनकी मेहर भी उनकी इस गरिमा के अनुकूल अनन्त ही होती है।

बात बड़ी है मेहेर की, जित मेहेर तित सब।

निमख ना छोड़ें नजर से, इन ऊपर कहां कहूं अब।।२५।।

श्री राज जी की मेहर की अनन्त (बहुत बड़ी) महिमा है। जहाँ उनकी मेहर होती है, वहाँ सारी निधियाँ स्वतः विराजमान होती हैं। उस आत्मा को धाम धनी एक पल के लिये भी अपनी नजरों से अलग नहीं करते। इससे अधिक मैं और क्या कहूँ।

भावार्थ– अक्षरातीत की मेहर भरी नजर सब पर समान रूप से होती है, किन्तु उसे पाने की पात्रता किसी–किसी में ही बन पाती है। "मेहेर सब पर मेहेबूब की, पर पावें करनी माफक" का कथन यही दर्शाता है। जिस प्रकार आशिक अपने माशूक को एक पल के लिये भी अपनी दृष्टि से ओझल नहीं करता , उसी प्रकार धाम धनी अपनी अँगनाओं को पल भर के लिये भी अपनी

मेहर भरी नजरों से ओझल नहीं करते। दूसरे शब्दों में यह भी कह सकते हैं कि अपनी अँगनाओं पर मेहर के रूप में धाम धनी का लाड–प्यार ही प्रवाहित होता है, जिसे एक आशिक का अपने माशूक पर न्योछावर (बलिहारी) हो जाना कहते हैं।

जहां आप तहां नजर, जहां नजर तहां मेहेर।

मेहेर बिना और जो कछू, सो सब लगे जेहेर।।२६।।

जिन ब्रह्मसष्टियों के धाम हृदय में स्वयं अक्षरातीत निवास करते हैं, वहीं पर उनकी मेहर भरी नजर (दृष्टि) होती है। इन आत्माओं के लिये धाम धनी की मेहर के अतिरिक्त सारा ब्रह्माण्ड विष के समान कष्टकारी लगता है।

बात बड़ी है मेहेर की, मेहेर होए ना बिना अंकूर।

अंकूर सोई हक निसबत, माहें बसत तजल्ला नूर।।२७।।

अक्षरातीत की मेहर की गरिमा अनन्त है। बिना अँकुर (सम्बन्ध) के धनी की मेहर नहीं होती। अँकुर भी ऐसा हो, जिसमें अक्षरातीत से मूल सम्बन्ध हो और परमधाम में निवास हो।

भावार्थ– इस चौपाई में यह संशय होता है कि सच्चिदानन्द परब्रह्म तो सबके हैं, फिर भी उनकी मेहर केवल ब्रह्मसृष्टियों के लिये ही क्यों होती है?

यह पूर्व में कहा जा चुका है कि सातों सागरों का बहता हुआ रस ही मेहर सागर है। जब संसार के जीव योगमाया के आनन्द को नहीं सम्भाल पाते, तो मेहर सागर की रसधारा को कैसे आत्मसात् कर सकेंगे। सूर्य का प्रकाश कीचड़, पत्थर, एवं आतशी शीशे पर समान रूप से

पड़ता है, किन्तु कीचड़ कभी भी आतशी शीशे की तरह अग्नि की लपट नहीं पैदा कर सकता।

इसी प्रकार धाम धनी की मेहर तो सभी पर है, किन्तु अपनी करनी के अनुकूल ही प्राप्ति होती है। इस सम्बन्ध में श्रीमुखवाणी का कथन है– "मेहेर सब पर मेहेबूब की, पर पावें करनी माफक।"

ज्यों मेहेर त्यों जोस है, ज्यों जोस त्यों हुकम।

मेहेर रेहेत नूर बल लिए, तहां हक इस्क इलम।।२८।।

धाम धनी की मेहर जब आत्मा के धाम हृदय में विराजमान होती है, तो धनी का जोश भी वहाँ अवश्य होता है और श्री राज जी के हुक्म की शक्ति भी रहती है। मेहर में ही तारतम ज्ञान का बल निहित होता है। जिस हृदय में प्रियतम अक्षरातीत की मेहर होती है, वहाँ प्रेम

और ज्ञान अवश्य रहते हैं।

भावार्थ– "ए नूर आगे थे आइया, अछर ठौर के पार" (कलस हिंदुस्तानी) तथा "नूर नाम तारतम" के आधार पर, इस चौपाई में भी "नूर बल" का अर्थ तारतम ज्ञान का बल होगा। इस प्रकार "नूर" और "इलम" एकार्थवाची शब्द हैं।

मीठा सुख मेहेर सागर, मेहेर में हक आराम।

मेहेर इस्क हक अंग है, मेहेर इस्क प्रेम काम।।२९।।

श्री राज जी की मेहर में अनन्त मिठास का सुख भरा हुआ है। धाम धनी का अनन्त आनन्द मेहर से ही अनुभव में आता है। मेहर के सागर में लहराने वाला इश्क धनी का अंग है। मेहर से ही धनी के प्रति प्रेम की इच्छा होती है।

भावार्थ– इस चौपाई के चौथे चरण में "काम" शब्द का तात्पर्य वैकारिक "काम" से नहीं, बल्कि दिव्य "काम" से है जिसका अर्थ होता है अखण्ड प्रेम की चाहना। इश्क और प्रेम समानार्थक शब्द हैं, इनमें मात्र भाषा भेद है।

काम बड़े इन मेहेर के, ए मेहेर इन हक।

मेहेर होत जिन ऊपर, ताए देत आप माफक।।३०।।

अक्षरातीत के हृदय की बहती हुई रसधारा ही मेहर है। इस प्रकार इस मेहर के काम भी बहुत बड़ी गरिमा वाले होते हैं। धाम धनी की महिमा अनन्त है। जब वे किसी पर मेहर करते हैं, तो अपनी महिमा के अनुकूल उस आत्मा को अखण्ड निधियों से भर देते हैं।

मेहेरें खेल बनाइया, वास्ते मेहेर मोमिन।

मेहेरें मिलावा हुआ, और मेहेर फरिस्तन।।३१।।

ब्रह्मसृष्टियों पर मेहर करने के लिये ही धाम धनी ने अपनी मेहर की दृष्टि से इस खेल को बनाया है। मेहर से ही ब्रह्मसृष्टियों तथा ईश्वरी सृष्टि की जागनी हुई है।

भावार्थ– श्यामा जी सहित ब्रह्मसृष्टियाँ हकीकत के आनन्द में इतनी डूबी रहती थीं कि उन्हें श्री राज जी के मारिफत स्वरूप दिल की पहचान ही नहीं थी। यह पहचान देने के लिये ही उन्होंने अँगनाओं के दिल में खेल देखने की इच्छा पैदा की। इसे ही ब्रह्मात्माओं के लिये मेहर करना कहा गया है। हुक्म (आदेश) भी मेहर का अंग है और धनी के हुक्म से ही यह खेल बना है, इसलिये इसे मेहर से बना हुआ कहा गया है।

ब्रह्मसृष्टियों को ब्रह्मवाणी के द्वारा अपने मारिफत स्वरूप

दिल की पहचान देनी थी, इसलिये इस जागनी ब्रह्माण्ड में धनी की मेहर से उनकी जागनी हुई।

मेहेरें रसूल होए आइया, मेहेरें हक लिए फुरमान।

कुंजी ल्याए मेहेर की, करी मेहेरें हक पेहेचान।।३२।।

धाम धनी की मेहर से मुहम्मद साहिब उनका आदेश–पत्र "कुरआन" लेकर आये। ब्रह्मसृष्टियों पर मेहर करने के लिये ही श्यामा जी तारतम ज्ञान लेकर आयीं। मेहर से ही ब्रह्मवाणी द्वारा धनी की पहचान हुई है।

भावार्थ– हिन्दू धर्मग्रन्थों में परमधाम और अक्षरातीत की साक्षी तो थी, किन्तु तौरेत, इंजील, और जंबूर में इस प्रकार की साक्षी न होने से कुरआन का अवतरण हुआ, ताकि जागनी ब्रह्माण्ड में ब्रह्मसृष्टियों को परमधाम एवं अन्य बातों की साक्षी मिल सके तथा जीव सृष्टि भी

श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप की पहचान कर सके। यही कारण है कि मुहम्मद साहिब एवं कुरआन का अवतरण भी धनी की मेहर से ही माना गया है। इसी प्रकार सद्गुरू धनी श्री देवचन्द्र जी (श्यामा जी) के द्वारा तारतम ज्ञान का अवतरण भी धनी की मेहर से ही सम्भव हुआ है।

दई मेहेरें कुंजी इमाम को, तीनों महंमद सूरत।
मेहेरें दई हिकमत, करी मेहेरें जाहेर हकीकत।।३३।।

धाम धनी की मेहर से ही तीनों सूरतों का अवतरण हुआ तथा श्री महामति जी को तारतम ज्ञान से सभी धर्मग्रन्थों के भेद खोलने की कला मिली। श्री राज जी की मेहर से ही महामति जी ने धर्मग्रन्थों के वास्तविक सत्य को उजागर किया है।

भावार्थ– मुहम्मद का अर्थ है– महिमा से परे। इस

जागनी ब्रह्माण्ड में ब्रह्मसृष्टियों को परमधाम की राह दिखाने के लिये श्री राज जी के हुक्म से तीन स्वरूपों का अवतरण हुआ, जिन्हें बशरी (मुहम्मद साहिब), मल्की (सद्गुरू धनी श्री देवचन्द्र जी), हकी (श्री प्राणनाथ जी) कहते हैं।

सो फुरमान मेहेरें खोलिया, करी जाहेर मेहेरें आखिरत।
मेहेरें समझे मोमिन, करी मेहेरें जाहेर खिलवत।।३४।।

श्री महामति जी ने धाम धनी की मेहर से कुरआन तथा भागवत आदि धर्मग्रन्थों के भेदों को खोला और आखिरत का समय जाहिर किया। इन धर्मग्रन्थों के गूढ़ रहस्यों को श्री राज जी की मेहर से ही ब्रह्मात्माओं ने समझा। धनी की मेहर से ही परमधाम के मूल मिलावे का ज्ञान इस संसार में आ सका।

भावार्थ– कुरआन के अनुसार कियामत का समय ही आखिरत का समय है, जिसमें हकीकत और मारिफत की राह आखरूल ईमाम मुहम्मद महदी के द्वारा दी जायेगी। इसके पश्चात् महाप्रलय होगा और सारी दुनिया बहिश्तों में अखण्ड हो जायेगी। इसी प्रकार पुराण संहिता, माहेश्वर तन्त्र, श्रीमद्भागवत्, तथा बृहत्सदाशिव संहिता के अनुसार स्वयं परब्रह्म अपनी आत्माओं के लिये जाग्रत बुद्धि का ज्ञान लायेंगे, जिसका अनुसरण करके आत्माएँ जाग्रत होंगी और अपने परमधाम को प्राप्त करेंगी। जीव सृष्टि भी उस ज्ञान को पाकर महाप्रलय के पश्चात् अखण्ड मुक्ति को प्राप्त होगी। इसी समय को वेद–कतेब की मान्यता में आखिरत का समय माना गया है।

ए मेहेर मोमिनों पर, एही खासल खास उमत।

दई मेहेरें भिस्त सबन को, सो मेहेर मोमिनों बरकत।।३५।।

इन ब्रह्मसृष्टियों पर धनी की मेहर की वर्षा हुई है, क्योंकि ये अक्षरातीत की अँगरूपा हैं और सबसे विशेष सृष्टि हैं। ब्रह्मसृष्टियों के इस मायावी जगत में आने के कारण ही कृपा रूप में सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को योगमाया (बहिश्तों) में अखण्ड मुक्ति मिली है।

मेहेरें खेल देख्या मोमिनों, मेहेरें आए तले कदम।

मेहेरें कयामत करके, मेहेरें हँसके मिले खसम।।३६।।

श्री राज जी की मेहर से ही ब्रह्ममुनियों ने इस मायावी खेल को देखा है। धनी की मेहर से ही वे ब्रह्मवाणी का ज्ञान प्राप्त कर अपने प्रियतम परब्रह्म के चरणों में आये हैं। धनी की मेहर से ही उन्होंने सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को

अखण्ड मुक्ति पाने का सौभाग्य प्रदान किया है और इस खेल के समाप्त होने के पश्चात् परमधाम में अपने प्रियतम से मिलेंगे।

भावार्थ– किरन्तन ७६/१ में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि "मुक्त देसी ब्रह्माण्ड को, आए ब्रह्म आतम सत।" यद्यपि जीव सृष्टि को अखण्ड मुक्ति तो धनी की मेहर से ही होगी, किन्तु शोभा ब्रह्ममुनियों को दी गयी है।

मेहेर की बातें तो कहूं, जो मेहेर को होवे पार।
मेहेरें हक न्यामत सब मापी, मेहेरें मेहेर को नहीं सुमार।।३७।।

मेहर की बातें तो तब की जायें, जब उसकी कोई सीमा हो। धाम धनी की मेहर से मैंने उनके दिल की सभी निधियों की पहचान कर ली है। इस प्रकार धनी के मेहर सागर से आने वाली मेहर की महिमा अनन्त है।

जो मेहेर ठाढ़ी रहे, तो मेहेर मापी जाए।

मेहेर पल में बढ़े कोट गुनी, सो क्यों मेहेरें मेहेर मपाए।।३८।।

यदि मेहर की वृद्धि स्थिर रहे, तब तो उसकी कोई माप भी ली जाये। एक ही पल में धनी की मेहर करोड़ों गुना बढ़ जाती है। ऐसी स्थिति में यह कदापि सम्भव नहीं है कि मेहर सागर की मेहरों को मापा जा सके।

भावार्थ– इस प्रकरण की चौपाई ३७–३८ में "मेहेरें मेहेर" में दो बार मेहर शब्द आया है। इसका तात्पर्य है– मेहर सागर की मेहरें। मेहर सागर से प्रेम (इश्क), ज्ञान (इल्म), एकत्व (वहदत), मूल सम्बन्ध (निस्बत), और आनन्द आदि की मेहर का रस आत्मा में प्रवाहित होता है, इसलिये मेहर शब्द को बहुवचन में "मेहेरें" कहकर वर्णन किया गया है।

मेहेरें दिल अर्स किया, दिल मोमिन मेहेर सागर।

हक मेहेर ले बैठे दिल में, देखो मोमिनों मेहेर कादर।।३९।।

धाम धनी की मेहरों ने ब्रह्मसृष्टियों के (मेरे) दिल को धाम बना दिया, जिससे यह दिल ही अब मेहर का सागर बन गया है। हे साथ जी! अब तो धाम धनी ही अपनी सम्पूर्ण मेहर के साथ दिल में विराजमान हो गये हैं। अब उनकी मेहर को देखिए (पहचानिए)।

भावार्थ– अपने धाम दिल में प्रियतम को बसाने का अधिकार तो सभी ब्रह्मसृष्टियों को है, किन्तु इस चौपाई में श्री महामति जी के धाम हृदय में विराजमान होकर उनके ही दिल को "मेहर सागर" बनाने का प्रसंग है।

बात बड़ी है मेहेर की, हक के दिल का प्यार।

सो जाने दिल हक का, या मेहेर जाने मेहेर को सुमार।।४०।।

धनी के मेहर की अनन्त महिमा है। यह श्री राज जी के दिल के प्रेम का स्वरूप है। इसके स्वरूप को या तो मेहर करने वाला धनी का दिल जानता है, या जिन ब्रह्मसृष्टियों पर मेहर होती है, वे जानती हैं।

भावार्थ– फारसी भाषा में "मेहर" शब्द का अर्थ होता है– अल्लाह की ओर से की जाने वाली मुहब्बत। हिन्दी में इसका समानार्थक शब्द अनुग्रह है, जिसका तात्पर्य होता है– अक्षरातीत के द्वारा अपनी आत्माओं को अपने दिल के सागर में डुबो लेना।

जो एक वचन कहूँ मेहेर का, ले मेहेर समझियो सोए।
अपार उमर अपार जुबांए, मेहेर को हिसाब न होए।।४१।।

यदि मैं धाम धनी की मेहर के बारे में एक भी बात कहती हूँ तो ऐसा समझना चाहिए कि मैं धाम धनी की

मेहर से ही ऐसा कह पा रही हूँ, अन्यथा उनकी मेहर का वर्णन कर पाना मेरे लिये सम्भव नहीं है। यदि मेरे तन को अनन्त उम्र मिल जाये और मेरी अनन्त जिह्वायें हों, तो भी मेहर का पूर्ण वर्णन (माप) हो पाना सम्भव नहीं है।

निपट बड़ा सागर आठमा, ए मेहेर को नीके जान।

जो मेहेर होए तुझ ऊपर, तो मेहेर की होय पेहेचान।।४२।।

हे मेरी आत्मा! तू इस बात को अच्छी तरह से जान ले कि श्री राज जी के दिल का यह आठवाँ सागर मेहर का सागर है, जो निश्चित रूप से अनन्त (बहुत बड़ा) है। श्री राज जी की मेहर की पहचान होना तभी सम्भव है, जब तुम्हारे ऊपर उनकी पूर्ण मेहर हो।

भावार्थ– इस चौपाई में श्री महामति जी ने अपने ऊपर कथन करते हुए परोक्ष (सांकेतिक) रूप से सुन्दरसाथ

को सम्बोधित किया है।

सात सागर बरनन किए, सागर आठमा बिना हिसाब।
ए मेहेर को पार न आवहीं, जो कई कोट करूँ किताब।।४३।।

इस सागर के वर्णन से पूर्व मैंने सात सागरों का वर्णन किया है, किन्तु यह आठवाँ सागर (मेहर का सागर) अनन्त है। इसके वर्णन में यदि मैं करोड़ों पुस्तकें भी लिख दूँ, तो भी मेहर सागर का पूर्ण वर्णन हो पाना सम्भव नहीं है।

भावार्थ– अक्षरातीत के जिस दिल से अनन्त परमधाम का प्रकटीकरण हुआ है, उस मारिफत स्वरूप दिल का पूर्ण वर्णन कर पाना कहीं भी – किसी भी प्रकार से सम्भव नहीं है, चाहे वह कालमाया का ब्रह्माण्ड हो या योगमाया का।

ए मेहेर मोमिन जानहीं, जिन ऊपर है मेहेर।

ताको हक की मेहेर बिना, और देखें सब जेहेर।।४४।।

धनी की मेहर को मात्र वे ब्रह्ममुनि ही जानते हैं, जिनके ऊपर उनकी मेहर बरसती है। इन ब्रह्ममुनियों को श्री राज जी की मेहर के बिना यह सारा ब्रह्माण्ड विष के समान दुःखदायी प्रतीत होता है।

महामत कहे ए मोमिनों, ए मेहेर बड़ा सागर।

सो मेहेर हक कदमों तले, पिओ अमीरस हक नजर।।४५।।

श्री महामति जी कहते हैं कि हे साथ जी! यह मेहर का सागर अनन्त है। आप उनके चरणों में आइये और उनकी नजरों से मेहर की अमृतमयी रसधारा का पान कीजिए।

भावार्थ– ब्रह्मवाणी के चिन्तन–मनन से धनी के चरणों

के प्रति अटूट श्रद्धा व विश्वास (ईमान) उत्पन्न होता है। इसे ही धनी के चरणों में आना कहते हैं।

चितवनि के द्वारा विरह–प्रेम में डूबकर जब आत्मा अपने प्राणवल्लभ का दीदार करती है, तो उनके हृदय से मेहर सागर की लहरें आत्मा के धाम हृदय में प्रवाहित होने लगती हैं। इसे ही अमृत रस का पान करना कहते हैं। इसे पुराणों में वर्णित कालमाया का अमृत नहीं समझना चाहिए, बल्कि यह तो अक्षरातीत का अनन्त प्रेम और आनन्द है, जिसे प्राप्त करना हमारा प्रथम कर्त्तव्य है। इस चौपाई में धाम धनी की ओर से सब सुन्दरसाथ को इस उपलब्धि तक पहुँचने के लिये आदेश (हुक्म) दिया गया है।